भावनात्मक बुद्धमित्ता / बुद्धि/ समझ

भावनात्मक बुद्धिमत्ता/बुद्धि/समझ (Emotional Intelligence)

पृष्ठभूमि

भावनात्मक बुद्धिमत्ता का उल्लेख सर्वप्रथम अरस्तू द्वारा किया गया था लेकिन इस पद को व्याख्यायित करने का श्रेय प्रसिद्ध अमेरिकी मनोवैज्ञानिक डेनियल गोलमैन को दिया जाता है। डेनियल गोलमैन ने अपनी बहुचर्चित पुस्तक ''इमोशनल इंटेलिजेंसः व्हाई इट कैन मैटर मोर दैन आई.क्यू.''(**Emotional Intelligence: Why it can matter more than I.Q.**) में इसका विस्तृत वर्णन किया है।

अर्थ

भावनात्मक बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति का अपने तथा दूसरों के मनोभावों को समझना, उन पर नियंत्रण करना और अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु उनका सर्वोत्तम उपयोग करना है।

भावनात्मक समझ दूसरों से व्यवहार करते समय व्यक्ति के संवेगों और अभिव्यक्तियों को नियंत्रित करती है ताकि शांति और सामंजस्य बनाया जा सके।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता के अवयव

डेनियल गोलमैन के अनुसार, इस अवधारणा के निम्नलिखित प्रमुख अवयव हैं–

- अपने संवेगों की सही ढंग से समझना।
- अपने संवेगों का आत्म–प्रबंधन करना।
- आशावादी तरीके से स्वयं को प्रेरित करना।
- दूसरे के संवेगों को पहचानना व उन्हें प्रबंधित या संचालित करना।
- भावनात्मक बुद्धि हृदय का प्रतिपक्षी नहीं बल्कि हृदय और मस्तिष्क का समुचित संयोजन है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता से सिविल सेवा/सेवक को लाभ

- प्रशासन के अंदर अंतर्वैयक्तिक संचार कौशल के विकास में अच्छे परिणाम देखने को मिलते हैं।
- प्रत्येक कर्मचारी की मनोवृत्ति और उनके कार्य निष्पादन क्षमता के बारे में पुर्वानुमान लगाने में मदद मिलती है।
- निरंतर कार्य के लिये अभिप्रेरणा तथा आशावादी दृष्टिकोण बनाए रखने में मदद मिलती है।
- नेतृत्व क्षमता के विकास व सुदृढ़ीकरण में सहायक।
- सांस्कृतिक बहुलवाद के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति के सृजन में मददगार।
- व्यवहार के स्तर पर आक्रामकता में कमी तथा परिवर्तन का वाहक बनने की क्षमता विकसित करने में कारगर।

सीमाएँ

- उचित व निष्पक्ष निर्णय में हस्तक्षेप करती है।
- तटस्थता व वस्तुनिष्ठता को कमज़ोर करती है।
- तर्क में बाधा उत्पन्न कर नौकरशाही को अकुशलता व पक्षपात की ओर प्रेरित करती है।

औचित्य

भावनात्मक समझ की सार्थकता इस बात में है कि इसके माध्यम से मानवीय संबंध स्वस्थ और बेहतर बनाए जा सकते हैं तथा जीवन से जुड़ी चुनौतियों से जूझने और इन चुनौतियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर समस्याओं के समाधन में मदद मिलती है।

//

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/emotional-intelligence